आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 20/03/2026; Revised: 22/03/2026; Accepted: 24/03/2026; Published: 28/03/2026

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS): एक ऐतिहासिक विवेचना, इसकी विविध शाखाएँ और भविष्य की वैश्विक प्रासंगिकता

डॉ.पूर्णिमा उमेश,

विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,

संत फिलोमेना कॉलेज, (स्वायथ), मैसुरु

डॉ.पूर्णिमा उमेश, भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS): एक ऐतिहासिक विवेचना, इसकी विविध शाखाएँ और भविष्य की वैश्विक प्रासंगिकता, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक1/मार्च 2026**,(133 -136)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19500712

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

सारांश

यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System) के उद्भव, विकास और इसकी दार्शनिक एवं वैज्ञानिक गहराई पर विस्तृत चर्चा करता है। भारत की ज्ञान परंपरा केवल आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं है। इसमें तर्क, प्रयोग और प्रमाण पर आधारित विज्ञान की निरंतरता है। यह शोध आलेख बताता है कि प्राचीन भारत की यह प्रणाली आधुनिक वैश्विक समस्याओं का, विशेषकर पर्यावरण संकट और मानसिक स्वास्थ्य, प्रबंध करने में मदद कर सकती है। अंत में, नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान के पुनर्जागरण और भविष्य की संभावनाओं पर ध्यान दिया गया है।

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान प्रणाली एक जीवंत परंपरा है, जो हजारों वर्षों के मानव अनुभव और प्राकृतिक अवलोकन का परिणाम है। यह प्रणाली इस विश्वास पर आधारित है कि ज्ञान का अंतिम लक्ष्य केवल भौतिक समृद्धि नहीं है। इसका लक्ष्य 'मुक्ति' और 'कल्याण' है। पाश्चात्य दृष्टिकोण मनुष्य को प्रकृति का विजेता मानता है। इसके

विपरीत, भारतीय ज्ञान परंपरा मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व की वकालत करती है। इसलिए, यह प्रणाली न केवल ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि आज के समय में इसकी प्रासंगिकता और बढ़ गई है। यह आलेख इस ज्ञान भंडार की विभिन्न परतों को उजागर करने का प्रयास करता है।

संक्षिप्त इतिहास

भारतीय ज्ञान का इतिहास वेदों के काल से शुरू होता है, जहां 'ऋत' के रूप में ब्रह्मांडीय नियमों की पहचान हुई। इसके बाद उपनिषदिक काल में दर्शन और आत्म-ज्ञान का पराकाष्ठा देखने को मिला। मौर्य और गुप्त काल के दौरान, भारत ने विज्ञान, गणित और चिकित्सा के क्षेत्र में अद्वितीय प्रगति की। नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय ज्ञान के केंद्र बने। मध्यकाल में कई विदेशी आक्रमणों और पुस्तकालयों के विनाश के बावजूद, यह ज्ञान परंपरा गुरु-शिष्य परंपरा और मौखिक श्रुतियों के माध्यम से जीवित रही। औपनिवेशिक काल में भारतीय ज्ञान को 'अंधविश्वास' कहकर दबाने का प्रयास किया गया, लेकिन अब आधुनिक विज्ञान के कई सिद्धांत प्राचीन ग्रंथों में प्राप्त हो रहे हैं और इसे पुनः सम्मान मिल रहा है।

भारतीय ज्ञान की शाखाएँ

भारतीय ज्ञान प्रणाली बहुत विस्तृत है। इसे मुख्य रूप से 'परा विद्या' (आध्यात्मिक) और 'अपरा विद्या' (व्यावहारिक) में बांटा जा सकता है। व्यावहारिक ज्ञान के अंतर्गत आयुर्वेद जैसे सम्पूर्ण जीवन विज्ञान आते हैं, जो केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं हैं। गणित की शाखा में शून्य, दशमलव प्रणाली और बीजगणित के मूल सिद्धांत प्राचीन भारतीय मेधा की देन हैं। खगोल विज्ञान में ग्रहों की गति और समय की गणना के सूक्ष्म सिद्धांत मिलते हैं। इसके अलावा, पाणिनी की अष्टाध्यायी ने भाषा विज्ञान में दुनिया की सबसे वैज्ञानिक भाषा संरचना दी है। अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में कौटिल्य के सिद्धांत आज भी शासन व्यवस्था में अनुकरणीय हैं। स्थापत्य कला और योग विज्ञान भी इस प्रणाली के अभिन्न अंग हैं, जो मनुष्य के बाह्य और आंतरिक विकास को सुनिश्चित करते हैं।

ज्ञान की विशालता और महत्व

इस प्रणाली की विशालता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि इसमें 14 विद्याओं और 64 कलाओं का वर्णन है, जो जीवन के हर पहलू को छूती हैं। इसका महत्व इसकी 'समग्रता' में है। जहां आधुनिक विज्ञान अक्सर खंडित दृष्टिकोण अपनाता है, वहीं भारतीय ज्ञान परंपरा मनुष्य को शरीर, मन और आत्मा के एकीकृत रूप में देखती है। यह ज्ञान प्रणाली 'वसुधैव कुटुंबकम' के भाव से भरी हुई है, जिसका अर्थ है कि ज्ञान का उपयोग केवल निजी लाभ के लिए नहीं, बल्कि मानवता के हित के लिए होना चाहिए। यह जीवन

के प्रति एक ऐसा दृष्टिकोण प्रदान करती है जो टिकाऊ विकास और आंतरिक शांति के बीच संतुलन बनाए रखता है।

भविष्य की दिशा और संभावनाएँ

भारत में भारतीय ज्ञान प्रणाली का भविष्य एक परिवर्तनकारी मोड़ पर है। नई शिक्षा नीति 2020 ने औपचारिक रूप से IKS को पाठ्यक्रम में शामिल करने का मार्ग प्रशस्त किया है। इससे आने वाली पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ सकेगी। भविष्य में, आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ जोड़ा जाएगा और प्राचीन कृषि पद्धतियों को जैविक खेती के माध्यम से पुनर्जीवित करने पर जोर दिया जाएगा। इसके साथ, भारतीय तर्कशास्त्र और गणितीय सिद्धांतों का इस्तेमाल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और कोडिंग जैसे क्षेत्रों में भी किया जाएगा। जैसे-जैसे दुनिया जलवायु परिवर्तन और मानसिक तनाव जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है, भारतीय ज्ञान प्रणाली एक 'वैश्विक मार्गदर्शक' के रूप में उभरने के लिए तैयार है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष में, भारतीय ज्ञान प्रणाली सिर्फ अतीत की धरोहर नहीं है। यह वर्तमान और भविष्य के लिए एक वैज्ञानिक और तार्किक ढांचा है। इसकी शाखाएँ और इसकी विशालता मानव मेधा की सर्वोच्च अभिव्यक्ति हैं। इस ज्ञान को आधुनिक संदर्भों में ढालकर और वैज्ञानिक प्रमाणीकरण के साथ प्रस्तुत करके भारत न केवल अपनी पहचान वापस पा सकता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक नई बौद्धिक क्रांति का नेतृत्व भी कर सकता है। समय की मांग है कि हम इस ज्ञान भंडार को गर्व और वैज्ञानिक जिज्ञासा के साथ अपनाएं।

संदर्भ (References)

* अल्तेकर, ए. एस. (1944). प्राचीन भारत में शिक्षा. नंद किशोर एंड ब्रदर्स।

* कपूर, कपिल. (2005). इंडियन नॉलेज सिस्टम्स. डीके प्रिंटवर्ल्ड, नई दिल्ली।

* राधाकृष्णन, एस. (1927). इंडियन फिलॉसफी (भाग 1 और 2). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

* बोस, डी. एम., सेन, एस. एन., एवं सुब्बारायप्पा, बी. वी. (1971). अ कंसाइज हिस्ट्री ऑफ साइंस इन इंडिया. आईएनएसए।

* शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार।

* काक, सुभाष. (2000). द आर्किटेक्चर ऑफ नॉलेज. सेंटर फॉर स्टडीज इन सिविलाइजेशन।

* सरस्वती, दयानंद. (1875). सत्यार्थ प्रकाश. विभिन्न संस्करण।

* पांडे, जी. सी. (1990). फाउंडेशंस ऑफ इंडियन कल्चर. मोतीलाल बनारसीदास।

* जिमरमैन, एफ. (1987). द जंगल एंड द अरोमा ऑफ मीट्स. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।

* शास्त्री, पी. डी. (1911). द फिलॉसफी ऑफ द उपनिषद्स. टी एंड टी क्लार्क।

****